सफलता का 'रहस्य'

- ब्र.कु. प्रीति,उ.प्र.।

प्रत्येक मनुष्य कोई न कोई काम अवश्य करता है और वह उसमें कामयाबी पाना चाहता है। यदि वह अपने कार्य में सफल हो जाता है तो वह प्रसन्न हो जाता है। भाग्य उसका साथ दे रहा है इसलिए वह सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। इसके विपरीत यदि किसी व्यक्ति को कार्य में असफलता मिल रही हो तो वह निराश हो जाता है। मन ही मन दु:खी रहता है और हर वक्त अपने भाग्य को कोसता रहता है। वह सोचता है, क्या करूँ? इतना परिश्रम करता हूँ, लेकिन भाग्य ही साथ नहीं देता। मुझे हर कार्य में असफलता ही मिलती है। फिर वह पंडितों, ज्योतिषियों के चक्कर में फँसता जाता है, जादू-टोने, जन्त्र-मन्त्र, न जाने कितने जतन करता है, किंतु फिर भी उन्हें असफलता ही मिलती है।

अपना लक्ष्य निर्धारित करके दृढ़ इच्छा शक्ति और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उसे प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें, कार्य के निष्पादन में सम्पूर्ण ज़िम्मेदारी, वफादारी और कठोर मेहनत करें, नि:संदेह सफलता आपके कदमों में होगी। यदि कार्य में कभी असफलता मिले तो भी निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप अपने मार्ग पर अडिग रहें। पुरुषार्थी मनुष्य का भाग्य ज़रूर साथ देता है। पुरुषार्थ से आप अपनी भाग्य की रेखाओं को अपने पक्ष में करने में सफल हो जाओगे। आपकी मेहनत अवश्य रंग लाएगी।

इस संदर्भ में मुझे एक प्राचीन कथा का स्मरण आया है। चालुक्य वंश का एक शासक ज्योतिष में बहुत विश्वास रखता था। बिना मुहूर्त के वह कोई भी कार्य नहीं करता था। पड़ोसी शासक उससे वैर-भाव रखते थे। उन्हें जब यह मालूम हुआ कि चालुक्य वंशी शासक बिना मुहूर्त के कोई भी कार्य नहीं करता है, तब उन्होंने उस पर ऐसे समय आक्रमण करने की योजना बनाई-जब युद्ध के लिए कोई शुभ मुहूर्त ही न हो।चालुक्य वंशी शासक के मंत्री को खुफिया तंत्र के माध्यम से इसकी जानकारी मिल गई। वह चिंतित हो उठा और उसका उपाय खोजने लगा। उसे ज्ञात हुआ कि राज्य में कड़ी मेहनत करने वाला किसान है, जो कोई शुभ मुहूर्त नहीं देखता। वह अपने परिश्रम के बल पर उन्नत कार्य करता है। मंत्री योजना बनाकर अपने राजा और राज ज्योतिषी को रथ में

बिठाकर उस मार्ग की ओर ले गया, जहां किसान प्रात:काल अपना खेत जोतने जा रहा था। उस किसान को कंधे पर हल ले जाते देखकर राज ज्योतिषी भड़क उठा और कहने लगा, अरे मूर्ख! तू अभी कहां हल जोतने जा रहा है? अभी तो हल जोतने के लिए कोई मुहूर्त ही नहीं है।

किसान बोला- मैं तो सदैव ऐसा ही करता हूँ। कोई मुहूर्त नहीं देखता। फिर भी प्रतिवर्ष तीन-तीन फसलें उगाता हूँ। मुहूर्त देखने वाले तो सदैव एक फसल ले जाते हैं। इस पर राज ज्योतिषी किसान से कहने लगा कि इसका मतलब यह है कि तेरा भाग्य बड़ा प्रबल है। मुझे तेरी हस्तरेखा दिखा। किसान ने हथेली का विपरीत हिस्सा ज्योतिषी की ओर कर दिया। इस पर ज्योतिषी क्रोधित होकर कहने लगा- मुर्ख तुझे तनिक भी अक्ल नहीं है, हस्त रेखा दिखाने के लिए हथेली को सीधे रखना पड़ता है। किसान फिर ज्योतिषी से कहने लगा- मैं कोई भीख थोड़े ही मांग रहा हूँ, जो हथेली को सीधे रखूँ? मैं तो जब भी फसल बोता हूँ और जब फसल काटता हूँ तब भी हथेली ऐसे ही रखता हूँ। ज्योतिषी और किसान के बीच हुई बातों को चालुक्य वंशी राजा गौर से सुन रहा था। अब उसकी समझ में आ गया। उन्होंने मुहूर्त पर भरोसा छोड़कर पुरुषार्थ पर भरोसा करना प्रारम्भ कर दिया।

परिणाम स्वरूप जब उस पर पड़ोसी शासकों ने संयुक्त रूप से आक्रमण किया, तब उन्हें परास्त कर अपने राज्य की सुरक्षा की।

इसी प्रकार एक अन्य प्रसंग है कि एक सुप्रसिद्ध विचारक स्वेट मार्डेन के पास आकर कहने लगा, मैं काम करने की इच्छा रखता हूँ, इस हेतु मैंने अपना लक्ष्य भी निर्धारित कर लिया है, उसके लिए वांछित साधन भी मेरे पास उपलब्ध हैं, किंतु मुझे अपने कार्य में कामयाबी नहीं मिल रही है। यदि मैं काम नहीं करूँ तो असफल होना मेरी समझ में आता है, किंतु काम करते रहने के उपरान्त भी असफल होना मेरी समझ में नहीं आ रहा है। उस व्यक्ति की बात को भलि-भांति समझ कर स्वेट मार्डेन बोले- यदि आप रेलगाड़ी को गुनगुने पानी से चलाने की कोशिश करेंगे तो वह नहीं चलेगी। किंतु आप पानी को इतना गर्म करें, जिससे वाष्प बनना शुरु हो जाये, तो गाड़ी पूरे रफ्तार से दौड़ेगी। इसी प्रकार आप जब तक अपने कार्य में पूरी शक्ति और एकाग्रता नहीं झोंकेंगे, तब तक सफलता मिलना संदिग्ध है। समूचे साधन होने के उपरान्त भी आप यदि मंथर गति से काम करेंगे तो आपको मंज़िल पर पहुंचने में कामयाबी कैसे मिल सकती है? स्वेट मार्डेन का उत्तर सुनकर उस व्यक्ति ने दृढ़ निश्चय किया और उत्साह से अपना कार्य करना प्रारम्भ किया और सफलता की चरम सीमा तक पहुँच गया।

सत्य है कि महान व्यक्तियों ने अपने जीवन में जो सफलता प्राप्त की है, वह केवल कल्पना की उड़ान से नहीं, अपितु जब उनके मित्र रात्रि को सोते थे, तब भी वे जागकर ऊपर उठने का प्रयास करते रहते थे। जीवन में सफल होने का यही रहस्य है। हम होंगे कामयाब एक दिन, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन। ●

कलानौर-रोहतक(हरियाणा)। योगगुरू रामदेव जी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दर्शना तथा ब्र.कु. प्रेम।

वुटवल-नेपाल। जगत गुरु 1008 स्वामी श्री विवेकानंद जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमला।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। आशीष सिंह,आई.पी.एस.,पुलिस सुपरीन्टेंडेंट,गंजाम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। अमरेन्द्र खतुआ,सेक्रेट्री डीन,फॉरेन सर्विस इंस्टीट्यूट,मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. कंचन।

महम-हरियाणा। एस.डी.एम. प्रदीप अहलावत को राखी बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. हरिन्दर।

सोजत सिटी-राज.। पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर लक्ष्मीनारायण दवे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कविता। साथ हैं ब्र.कु. आरती।

दिल्ली-डेरावल नगर। हरलीन कौर,डिप्युटी डायरेक्टर,एज्युकेशन, एन.एस.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रभजोत।

कौशाम्बी-उ.प्र.। कारागार में कैदी बहनों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमल।

मण्डी-हि.प्र.। जेल में जेलर एन.आर. भारद्वाज को राखी बांधने के पश्चात् कैदी भाइयों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. जमुना, ब्र.कु. दक्षा तथा ब्र.कु. दीपा।

प्रागपुर-हि.प्र.। औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र नैहरन पुखर में राखी बांधने के पश्चात् प्रिन्सीपल कुलदीप सिंह एवं स्टाफ के साथ ब्र.कु. सुमिता, ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. भूपिंदर सिंह डढ़वाल।